Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भदेसर का ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्व एवं भौगोलिक विशेषताएं

हरीश चंद्र मीणा *

* महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – भदेसर राजस्थान राज्य के दक्षिण भाग में स्थित अरावली की पहाड़ियों के बीच प्रकृति की गोद में बसा हुआ प्राचीन कस्बा है। यह चित्तौडगढ़ जिले के अन्तर्गत आता हैं , चित्तौडगढ से लगभग 33 कि.मी . की दूरी पर दक्षिण – पूर्व दिशा में स्थित हैं। भदेसर को स्थानिय ग्रामीण जन 'भदेर' भी कहते हैं।

भौगोलिक विशेषताएं – भदेसर के क्षेत्र की भूमि मुख्यत: समतल एवं हल्की पहाड़िया हैं। यहां प्राय: काली और दोमट मिट्टी पाई जाती हैं। जो कि कृषि कार्यो के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं, यहां पास में 'हमेर सागर' तालाब बना हुआ हैं। तथा भदेसर से 2 कि .मी. दूर 'वागण नदी' भी बहती है जो कि 'बेड़च नदी' की मुख्य सहायक नदी हैं। भदेसर के आस–पास कई विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक स्थल है मेवाड़ के प्रसिद्ध कृष्णाधाम सांवरिया सेठ मन्दिर, आवरी माता मन्दिर,धनेश्वर महादेव मंदिर, चित्तौडगढ़ दुर्ग कई प्रसिद्ध हैं, जो कि परिचय के मोताज् नहीं हैं।भदेसर की सड़क कनेक्टिविटी भी बहुत अच्छी हैं,चित्तौड़गढ़ से उदयपुर जाने वाले NH–27 से होडा चौराहा से अचलपुरा गांव होते हुए जिला सड़क भदेसर वआसावरा माता की तरफ आती हैं यह सड़क निम्बाहेड़ा से मंगलवाड जाने वाले मार्ग से जुड़ जाती हैं। तथा कपासन से भी सांवलिया जी (मडफिया) होते हुए भदेसर की तरफ सड़क आती हैं।

भदेसर का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व – भदेसर बहुत प्राचीन कस्बा है। जो कि मेवाड़ रियासत में भदेसर ठिकाना बत्तीस उमरावों में गिना जाता था। कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक एनाल्स एण्ड एटीक्विटिटीज ऑफ राजस्थान में इसे 'भदेश्वर' लिखा हैं।

इस कस्बे को शुरूआती दौर में 'भद्दा मीणा' नामक व्यक्ति के द्वारा बसाया गया इस कारण इस गाँव का नाम भदेसर पड़ गया। कालान्तर में भद्दा मीणा के वंशज जग्गू मीणा को 1350 ई. के आस–पास बहलौत शाखा के अंगद जी राठौड़ चित्तौडगढ़ के फौजदार (वृहदपाल जी राठौड़ के पुत्र थे तथा आसा जी राठौड़ के भाई थे) ने आक्रमण कर हराया और भदेसर पर अपना अधिकार कर लिया। तथा जग्गू मीणा को पटेल पद व लम्बरदारी सौंपी और कृषि कार्य हेतू कुछ जमीन प्रदान की। तथा लक्ष्मीनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया। तथा मेवाड़ महाराणा की सेना का अभिन्न अंग रहे सन् 1750 ई. तक भदेसर बलुओंत राठौड़ों के अधिकार में रहा, भदेसर में चुण्डावतों का ठिकाना, कायम होने की वजह से बलुओत राठौड़ नलों (भदेसर का आस–पास कार क्षेत्र) में जाकर बस जाते हैं। सन् 1750 ई. के आस–पास सलुम्बर के राव भैरूसिंह चुण्डावत के पुत्र सरदार सिंह ने मेवाड़ महाराणा अरिसिंह से इस जागीरी का पट्टा करवाया और भदेसर के प्रथम ठिकानेदार बने इससे पहले सन् 1740 ई. में 'खेरोदा दुर्ग' के लिए शक्तावतों व चुण्डावतों में लड़ाई छिड़ जाती हैं। जिसमें अनेक राजपुत यौद्धा काम आ जाते हैं अंतत: मेवाड़ महाराणा के द्वारा खेरोदा का दुर्ग को स्वंय अपने अधिकार क्षेत्र में रखा, कुछ वर्षो पश्चात् महाराणा के द्वारा इस दुर्ग को भदेसर रावत सरदार सिंह को दिया जाता हैं। महाराणा अरिसिंह के विवाह के समय बारात में जाने वालों सामन्तो में सरदारसिंह जी का भी उल्लेख हैं।

अक्टूबर 1789 ई. की एक घटना है। जिसका उल्लेख कविराजा श्यामलदास ने अपनी पुस्तक – 'वीर' विनोद के द्वितिय भाग में किया हैं।कि महाराणा भीमसिंह के शासनकाल के समय प्रधानमंत्री सोमचन्द गांधी के द्वारा शक्तावतों को प्राथमिकता देते हूए चुण्डावतों की कुछ जागीरें छीन ली जिससे इस बात पर क्रोधित होकर कुराबड़ के रावत अर्जूनसिंह चुण्डावत के साथ मिलकर सरदार सिंह (भदेसर) ने राजमहलों में सोमचन्द गांधी की हत्या कर दी । इस घटना से मेवाड़ महाराणा भीमसिहं जी इन चुण्डावत सरदारों से बहुत ही नाराज होते हैं। कुछ वर्षो के पश्चात सन् 1813 ई. में बदले की भावना से सोमचंद के भाई सत्तीदास के द्वारा आयड. नदी के किनारे सरदार सिंह की भी हत्या कर दी जाती हैं । बाद में चुण्डावत सरदारों ने भी सतीदास को भी नहीं बक्शा और मौत के घाट उतार दिया। यह दौर भदेसर के लिए बहुत ही उठा – पटक वाला समय रहा। कुछ समय के लिए लगभग 3 वर्षो तक भदेसर, टोंक के नवाब अमीर खां पिण्डारी गनिमाओं के अधीन चला जाता है,और यहां पर नवाब के द्वारा थाना बैठा दिया जाता है। सरदार सिंह के पुत्र हम्मीर सिंह भभराना के क्षेत्र में रह रहे थे। वहां से हम्मीर सिंह भदेसर की तरफ कूच करते है और भदेसर पर आक्रमण कर नवाब के कई सिपाहियों को मौत के घाट उतार देते हैं। और भदेसर पर अपना अधिकार स्थापित कर मेवाड़ महाराणा से इस जागीर का पुन: पट्टा करवाते हैं और हम्मीर सागर तालाब की पाल को बनवाते हैं।कर्नल जेम्स ने अपनी पुस्तक 'एनाल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' में लिखा है कि रावत हम्मीर सिंह की आमदनी तीन हजार रुपयों से अधिक नहीं थी किन्तु अपने बल व पौरूष से अस्सी हजार रुपये वार्षिक कर रखी थी। हम्मीर सिंह ने तत्कालिन मेवाड़ महाराणा पर अनुचित प्रभाव कायम कर रखा था। लावा सरदार गढ़ के ठिकानेदार व हम्मीर सिंह दोंनों के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। दोनों का स्वभाव झुंझारू तथा विद्रोही प्रकृति का था दोनों ठिकानेदार अपनी

कूटनीतिज्ञता व राजनीति के माध्यम से मेवाड़ महाराणा को प्रभावित करते थें। अन्य कई विद्रोही सरदारों की जागीर जब महाराणा के द्वारा वापस ले ली उन दिनों में भी भदेसर रावत हम्मीर सिंह और लावा सरदारगढ़ के सरदार द्वारा अनाधिकृत रूप अपनी जागीरों का भोग कर रहे थें। अन्ततः जब महाराणा ने दरबार में आने पर रोक लगा दी तब जाकर खेरोदा का दुर्ग तथा अनाधिकृत जागीरीयां महाराणा को सौंपी गई।

रावत हम्मीर सिंह की मृत्यू के के बाद उनका पुत्र उम्मेदसिंह गद्दी पर बैठे और सात वर्षो तक भदेसर के ठिकानेदार रहें। लेकिन सात वर्ष के बाद ही उनका देहान्त हो जाता है। उम्मेदसिंह के कोई पुत्र नहीं होने की वजह से सन् 1861 ई .में चावण्ड से सौभाग्यसिंह जी के पुत्र भोपालसिंह को भदेसर गोद लाया गया । इनके समय काल को भदेसर का स्वर्णिम काल कहा जा सकता हैं। इनके समय जनता सुखी थी। इनके समयकाल में भदेसर ठिकानें में कई निर्माण कार्य करवाएं गए जैसे रावले में महल, हम्मेर सागर तालाब का जीर्णोद्धार,व तालाब के पास शिकारवाड़ी ,गढ़ व मन्दिर निर्माण के कार्य करवाएं ।

महलों की सीढ़ियों पर दो शिलालेख लगाये हुए हैं जिनमें उल्लेखित हैं कि महलों की नीव सन् 1873 ई . (वैशाख सूदी दशमी के दिन) को महलों की नीवं रखी गई व सन् 1883 ई. (पौष सूदी तेरस के दिन) को ग्रह प्रवेश किया गया।

रावत भोपाल सिंह के चार पुत्र हुए उसमें सें तेजसिंह को सलुम्बर रावत जोधसिहं के पुत्र नहीं होनें की वजह से गोद ले लिया जाता हैं परन्तु उसका देहान्त जोधसिंह की विद्यमानता में हो जाने से उसका बड़ा. भाई मानसिंह सलुम्बर गोद गया। उस समय भोपाल सिंह के तीसरे पुत्र इन्द्रसिहं को भैंसरोडगढ़ के रावत प्रतापसिंह ने अपनी विद्यामनता में गोंद ले लिया। चौथे पुत्र का भी देहान्त हो जाने से भोपालसिंह के कोई पुत्र ना होने के कारण उसने चावण्ड के मुकन्दसिहं के पुत्र तख्तसिंह को भदेसर गोद लिया जाता हैं। तत्पश्चात् तख्तसिंह सन् 1921 में भोपालसिंह का देहान्त हो जाने के बाद भदेसर के ठिकानेदार बनते है। रावत तख्त सिंह लगभग 12 साल तक भदेसर ठिकानेदार रहते हैं, सन् 1932 ई. में बीमार होने के कारण इनका देहान्त हो जाता है। जब रावत तख्त सिंह बीमार थे तब 'हाटोला' से कुंवर जगदीश सिंह को भदेसर गोद रखने के लिए लाया जाता है। जिसका नाम परिवर्तित कर अभयसिंह , नाम रखा जाता है तथा गोदनामें के कागज बनाकर मेवाड़ महाराणा भोपालसिंह के पास भेजा जाता है,पर महाराणा इसकी अनुमति प्रदान नहीं करते हैं। इस समय महाराणा भोपालसिंह जी चित्तौड़गढ़ दुर्ग में विराजमान होते हैं। उन्होंने भदेसर को खालसा घोषित कर इसके इंतजाम के लिए हाकिम नियुक्त कर दिया जाता है। भदेसर के सरदारों के द्वारा इसका विरोध किया जाता है और जबरदस्ती हाटोला के कुंवर अभयसिंह को पगड़ी पहना दी गई। महाराणा भूपाल सिंह को इस घटना की सूचना मिलने पर मेवाड़ के सेनापति ट्रेंच को सेना लेकर भदेसर भेजा जाता हैं। ट्रेंच के द्वारा 36 आदमियों को गिरफ्तार कर उदयपुर जेल ले जाया गया। जिनमें हाटोला के कुंवर अभयसिंह समेत कई लोग शामिल थें। चन्दनसिंह (झाडौली), वैद्यभूरा भट्ट ,ख्वास मोडीराम, चुन्नीलाल मेहता, करीम खां नीलगर, गोविन्द सिंह आदि प्रमुख व्यक्ति थे।

जब तक तख्तसिंह की रानी 10 वर्षो तक जीवित रही तब तक उनके महलों की सम्पत्ति कोई नहीं ले जा सका परन्तु उनके देहान्त के बाद यहां का सारा सामान गए जैसे रावले में महल, हम्मेर सागर तालाब का जीर्णोद्धार,व तालाब के पास शिकारवाड़ी ,गढ़ व मन्दिर निर्माण के कार्य करवाएं ।

महलों की सीढ़ियों पर दो शिलालेख लगाये हुए हैं जिनमें उल्लेखित हैं कि महलों की नीव सन् 1873 ई .(वैशाख सूदी दशमी के दिन) को महलों की नीवं रखी गई व सन् 1883 ई. (पौष सूदी तेरस के दिन) को ग्रह प्रवेश किया गया।

रावत भोपाल सिंह के चार पुत्र हुए उसमें सें तेजसिंह को सलुम्बर रावत जोधसिहं के पुत्र नहीं होनें की वजह से गोद ले लिया जाता हैं परन्तु उसका देहान्त जोधसिंह की विद्यमानता में हो जाने से उसका बड़ा भाई मानसिंह सलुम्बर गोद गया । उस समय भोपाल सिंह के तीसरे पुत्र इन्द्रसिहं को भैंसरोडगढ़ के रावत प्रतापसिंह ने अपनी विद्यामनता में गोंद ले लिया। चौथे पुत्र का भी देहान्त हो जाने से भोपालसिंह के कोई पुत्र ना होने के कारण उसने चावण्ड के मुकन्दसिहं के पुत्र तख्तसिंह को भदेसर गोद लिया जाता हैं। तत्पश्चात् तख्तसिंह सन् 1921 में भोपालसिंह का देहान्त हो जाने के बाद भदेसर के ठिकानेदार बनते है। रावत तख्त सिंह लगभग 12 साल तक भदेसर ठिकानेदार रहते हैं, सन् 1932 ई. में बीमार होने के कारण इनका देहान्त हो जाता है। जब रावत तख्त सिंह बीमार थे तब 'हाटोला' से कुंवर जगदीश सिंह को भदेसर गोद रखने के लिए लाया जाता है। जिसका नाम परिवर्तित कर अभयसिंह , नाम रखा जाता है तथा गोदनामें के कागज बनाकर मेवाड़ महाराणा भोपालसिंह के पास भेजा जाता है,पर महाराणा इसकी अनुमति प्रदान नहीं करते हैं। इस समय महाराणा भोपालसिंह जी चित्तौड़गढ़ दुर्ग में विराजमान होते हैं। उन्होंने भदेसर को खालसा घोषित कर इसके इंतजाम के लिए हाकिम नियुक्त कर दिया जाता है। भदेसर के सरदारों के द्वारा इसका विरोध किया जाता है और जबरदस्ती हाटोला के कुंवर अभयसिंह को पगड़ी पहना दी गई। महाराणा भूपाल सिंह को इस घटना की सूचना मिलने पर मेवाड़ के सेनापति ट्रेंच को सेना लेकर भदेसर भेजा जाता हैं। ट्रेंच के द्वारा 36 आदमियों को गिरफ्तार कर उदयपुर जेल ले जाया गया। जिनमें हाटोला के कुंवर अभयसिंह समेत कई लोग शामिल थें। चन्दनसिंह (झाडौली), वैद्यभूरा भट्ट ,ख्वास मोडीराम, चुन्नीलाल मेहता, करीम खां नीलगर, गोविन्द सिंह आदि प्रमुख व्यक्ति थे।

जब तक तख्तसिंह की रानी 10 वर्षो तक जीवित रही तब तक उनके महलों की सम्पत्ति कोई नहीं ले जा सका परन्तु उनके देहान्त के बाद यहां का सारा सामान उदयपुर ले जाया गया।

भदेसर के महल आज भी अपनी भव्यता का बखान करते हैं तथा अपने इतिहास की दास्तान सुनाते हैं तथा यहां बनी हुई छतरियां यहां के ठिकानेदारो का ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। आजादी के बाद इन महलों में तहसील कार्यालय, अस्पताल,व स्कूल संचालित किये जाते थें। भदेसर केवल ऐतिहासिक रूप से ही नहीं अपितु दार्शनिक व सांस्कृतिक रूप से भी मेवाड़ व राजस्थान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

भदेसर भैरू बावजी मन्दिर– मेवाड़ का वह प्रसिद्ध धाम जहां से 'मेवाड़ के सैकड़ों देवरों में यहां से जोत' गई। यह मन्दिर भदेसर कस्बे में हमेर सागर तालाब के किनारे बना हुआ हैं।अति प्राचीन देवस्थान हैं तथा मेवाड़ आंचल व स्थानीय लोगों का आस्था का केन्द्र रहा हैं। लोकमान्यता है कि 'भैरूजी को जंजीरों से बावड़ी के अन्दर बांधा हुआ हैं', क्योंकि जब स्त्रियां पानी भरने आती थी तो ये उनकी मटकियां फोड़ देते थे। यह बावड़ी मन्दिर के प्रांगण में स्थित हैं। मन्दिर के पास दो शिलालेख भी लगे हुए हैं तथा मन्दिर

की पूर्व दिशा में विशाल आम्रवृक्षों का बागान लगा हुआ हैं। मेवाड़ी जनमानस में भेरूजी बावजी के प्रति अटूट आस्था होने के कारण हजारों कि तादाद में मेवाड़ ही नहीं अपितु राजस्थान के विभिन्न अंचलों व अन्य राज्यों से भी श्रृद्धालु दर्शन हेतू आते हैं, तथा मनौतियां मांगते हैं श्रद्धालुओं की भैरूजी मनौतियां पूरी करते हैं। स्थानिय लोगों का कहना हैं कि भैरूजी के 'दरबार में देर हो सकती है परन्तु अंधेर नहीं' निश्चित ही सभी श्रृद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

भैरूजी के बारें में विशेष मान्यता –'फूल –पांती मांगने की हैं' फूल – पांती मांगने से तात्पर्य है कि किसी शुभ कार्य को करने या नहीं करने की अनुमति देना। इस सम्बद्ध में कहा जाता है कि स्थानीय लोग अपने बच्चों की शादी – ब्याह , आणा – गौणा , गोल – नामा , फसलों की कटाई – बुवाई व अन्य निर्माण कार्यो , मुकदमों सम्बन्धी फूल – पांती मांगने की विशेष मान्यता रखते हैं। मनोकामनाएं पूर्ण होने पर श्रृद्धालुओं के द्वारा भैरूजी बावजी के प्रांगण में रातीजगा (रात्रीजागरण) व प्रसादी – दाल – बाटी चूरमा व भजन संध्या का आयोजन किया जाता है विशेष भाद्रपद शुक्ला छठ (षष्टमी) एवं माघ शुक्ला षष्टमी को रात्री जागरण का विशेष महत्व हैं। इसके अलावा श्रृद्धालुयों के द्वारा शराब व बकरे की बली चढ़ानें की मान्यता भी थी किन्तु पशु क्रूरता अधिनियम 1960 के लागू होनें के पश्चात प्रतिबंधित कर दिया गया है।

पुजारी इस मंदिर में नाथ सम्प्रदाय के पुजारियों के द्वारा भैरूजी बावजी की सेवा पूजा–आरती आदि साप्ताहिक ओसरे के अनुसार कि जाती हैं यहां दर्शन 24 घण्टे होते हैं। तथा यहां भैरूजी बावजी से सम्बन्धित कही गीत महिलाओं के द्वारा गाये जाते हैं। आते समय गीत – 'भैरू जी थारे दर्शन आया जी ..... जाते समय– 'बाबूलाल सा पातला वाऊ लाड्या रा भरतार बाई ए सोनो वदाऊ भैरूनाथ ... ... ' ये बोल यहां नित्यप्रति सुने जा सकते हैं।'

अभी हाल ही में भैरूजी बावजी के भव्य मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है – इस मंदिर का निर्माण सोमपुरा शैली (भारतीय नागर शैली का हिस्सा) में किया जा रहा है। जिसकी लागत – 21 करोड़ 51लाख रूपयें से निर्माण कार्य किया जा रहा है। इस निर्माण का ठेका पाली के प्रसिद्ध शिल्पी कैलाश कुमार मोतीलाल सोमपुरा को दिया गया हैं

2025 में भदेसर भैरूनाथ मन्दिर का भूमि पूजन शिला स्थापना और पूजा– कार्य बड़े आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ। भैरूनाथमन्दिर मेवाड़ के प्रसिद्ध कृष्णाधाम सांवरिया सेठ मन्दिर से पूर्व दिशा की ओर केवल 11 कि. मी की दूरी पर स्थित हैं। तथा शक्तिपीठ आवरीमाता से 5 कि.मी पश्चिम दिशा में स्थित होने के साथ ही चित्तौडगढ दुर्ग से 33 कि. मी. दक्षिण दिशा की तरफ स्थित होने के कारण भविष्य में और अधिक प्रसिद्धी पाएगा।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि भदेसर मेवाड़ रियासत में 32 उमरावों के ठिकानों में अपना प्रमुख स्थान रखता था।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कविराजा श्यामलदास की पुस्तक वीरविनोद
2. कर्नल टॉड की पुस्तक –'एनाल्स एण्ड एटीक्विटिजीज ऑफ राजस्थान'
3. भदेसर महलों की सीढ़ियों पर में लगे शिलालेख
4. बलुओत राठौड़ों का इतिहास पुस्तक –अर्जूनसिंह राठौड़ नेडिया
5. पत्रिका News paper(आओ गांव चलें) दिनांक – 27 Sept. 1990 ई.

****